जीवन दान

दीपिका

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Deepika 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-392-6

Cover design: Yash Singhal
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: July 2025

सुनैना

डॉ• हरीश

युवराज

रुपाली.

वीरू

मुख्य पात्र

विस्तार से –

युवराज - लघु- उपन्यास का मुख्य पात्र, प्रेमी और अपने इरादो पर कायम रहने वाला युवक|

सुनैना - युवराज के साथ उसका प्रेम - संबंध है, जो दिखने मे अटूट और व वास्तविकता में दुःखदायी है|

रूपाली - उपन्यास में एक महत्तवपूर्ण पात्र, जिसका युवराज के साथ विशेष संबंध है|

डॉ• हरीश - मुखिया पात्र ,जिसका सुनैना के साथ जीवनसाथी (पति) का रिश्ता है|

वीरू - एक अन्य पात्र, जो युवराज से बचपन से मित्रता रखता है|

इन मुख्य पात्रो के अलावा, उपन्यास में अन्य पात्र भी है, जो कहानी को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाते है|

जीवनदान

"देख तेरी चाहत में मौत को गले लगाया है
गर फिर भी तुझे मेरी कमी महसूस न हो,
तो लानत है मुझे ऐसी मोहब्बत पर..||

अपनी मोहब्बत को पाने के लिए एक लड़का जो हर मुश्किल का सामना करता है, आज उसी मोहब्बत के सामने वो हार गया| युवराज जो बचपन से ही अनार्थ हो गया था| बूढ़ी नानी की गोद में खेलकूद कर बड़ा हुआ| जब वो चार माह का अपनी मां के गर्भ में पल रहा था तब उसके बाबा (पिता) जो सुरंग खोदने का काम करते थे , एक दिन गहरी सुरंग की खुदाई करते समय मिट्टी धस जाने की वजह से उनकी वही दबकर मौत हो गई| युवराज की मां ये दुःख सहन नहीं कर सकी , वो धीरे धीरे बीमार पड़ने लगी |

आखिरी महीना जब युवराज का जन्म हुआ तभी उसकी मां ने दम तोड़ दिया और हमेशा हमेशा के लिए युवराज से दूर चली गई | गरीब बूढ़ी नानी युवराज को अपने घर ले आई जो पहाड़ी इलाके के समीप एक छोटे से गांव में एक झोपड़ी में रहती थी| बूढ़ी नानी अपना और युवराज का पेट भरने के लिए थोड़ी मेहनत करती और कुछ खाना घरों से मांग कर लाया करती थी| समय के साथ - साथ युवराज भी बड़ा होता गया और अपनी नानी के काम में हाथ बटाने लगा|

(एक रात)

युवराज – नानी , मेरे मां – बाबा कहा है ? मेरे सभी दोस्त मुझसे पूछते है|

(नानी एक दम से शौक हो जाती है)

युवराज – बोलो न नानी कहा है मेरे मां – बाबा ?

(नानी नम आंखों से युवराज की तरफ देखती है और उसे गले लगा लेती है | नानी आसमान में तारों की तरफ इशारा करती हुई कहती है – “ वो दो तारे दिख रहे है? , जो सबसे ज्यादा चमक रहे है , वहीं है मेरे युवी के मां बाबा | (नानी प्यार से युवराज को युवी कहकर बुलाती थी)

युवराज- अच्छा ! तो ये इतने सारे तारे है आसमान में, ये भी किसी के मां बाबा है ?

“ नानी सिर हिलाते हुए हा कहती है |

युवराज – लेकिन नानी सभी के मां – बाबा अपने बच्चों के पास है मेरे मां – बाबा उधर क्यों है, वो मेरे पास क्यों नहीं आते ?

नानी - चलो अब रात हो गई, मां – बाबा को सोने दो और तुम भी सो जाओ |

रोज की तरह युवराज सुबह होते ही नानी की थोड़ी मदद करता और फिर दोस्तो के साथ खेलने निकल जाता | धीरे - धीरे समय बीतता गया, अब युवराज पन्द्रह साल का हो चुका था| नानी की उम्र ढलती जा रही थी, उनकी सेहत बिगड़ने लगी थी| युवराज ने काम का बोझ अपने सिर उठा लिया था | युवराज कमाने के लिए पहाड़ों में जाता, वहां दिनभर पत्थर तोड़ता और काम के बदले मिले पैसों से शाम को गांव से 3 किलोमीटर दूर पैदल चलकर नानी की दवाई और खाना लेकर आता |

एक दिन जब युवराज काम के लिए निकलता है तो रस्ते में उसका दोस्त वीरू मिलता है|

वीरू – अरे ! युवराज आज इतनी जल्दी ?

युवराज – हां विरु, मेरी नानी अब बीमार रहती है | थोड़ा ज्यादा काम करके ज्यादा पैसे कमाना चाहता हु, जिससे नानी का इलाज एक अच्छे से अस्पताल में करवा सकू|

वीरू – हां युवी ये तो है | मैं और मेरे बाबा मिलकर कमाते है, मैं भी अपनी मां का इलाज बड़े

अस्पताल में करवाना चाहता हूं|

युवराज – अच्छी बात है ! तुम दो लोग हो कमाने वाले जल्दी पैसा कमाओगे , जल्दी इलाज होगा| खैर मैं तो अकेला हु कमाने वाला |

वीरू – तुम अपने मां बाबा को इधर क्यों नहीं बुला लेते या फिर तुम उनके पास चले जाओ |

युवराज – कहा वीरू | मेरे मां – बाबा आसमान में सितारे बने बैठे है | मै रोज उनको देखता हु|

(इतना सुनकर वीरू जोर – जोर से हंसने लगता है)

युवराज – तू हंस क्यों रहा है ?

वीरू – (हंसते हुए कहता है) हंसी नहीं आएगी तो क्या आएगी, तुझे भी मेरी तरह पागल बनाया गया है| भला तारे भी किसी के मां – बाबा होते है|

युवराज – हे विरु ऐसा मत बोल| मेरी नानी कहती है दो चमकीले तारे वही मेरे मां – बाबा है|

(वीरू फिर से हंसने लगता है)

वीरू – अरे बुद्धू ! जब मैं अपने दादा – दादी को याद करते हुए अपने बाबा से उनके बारे में पूछता था तब मेरे बाबा भी वहीं दो चमकीले तारों की तरफ इशारा करते हुए कहते थे कि वो है तेरे दादा – दादी, वही से अपने पोते वीरू को देखते है|

युवराज – लेकिन (युवराज बोलता ही है कि विरु उसकी बात काट देता है)

वीरू - अरे सुन ! ये तारे किसी के मां - बाबा नहीं होते| मेरे दादा और दादी की तरह तेरे मां बाबा भी मर गए होंगे|

(युवराज इतना सुनकर खामोश हो जाता है और वहां से चल जाता है|)

शाम को युवराज खाना लेकर आता है| युवराज को देखते ही नानी समझ जाती है कि वो उदास है|

नानी – क्या हुआ युवी, उदास क्यों है…

युवराज – (मुस्कुराते हुए) कुछ भी तो नहीं नानी बस आज थोड़ा थक गया|

खाना खाने के बाद युवी , नानी को दवा खिलाता है और थोड़ी देर बाद नानी की गोदी में सिर रखकर बैठ जाता है|

युवराज – नानी तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला ?

नानी – कौनसा झूठ

युवराज – यही की आसमान में वो दो चमकीले तारे मेरे मां – बाबा है|

नानी – हां तो इसमें झूठ क्या है युवी बेटा |

युवराज – सब झूठ ही है नानी | ये तारे किसी के मां – बाबा नहीं होते, ये बस एक कहानी है जो बच्चों को बहलाने के लिए बनाई गई है|

(नानी खामोश हो जाती है)

युवराज – मुझे सच जानना है नानी| कहा है मेरे मां – बाबा ? बताओ न।

नानी – (कठोर दिल से कहती है) युवी जब तू चार महीने का तेरी मां के पेट में पल रहा था तब तेरे बाबा एक सुरंग की खुदाई करते समय मिट्टी धंसने के कारण तेरे बाबा वही दबकर मारे गए| तेरी मां ये सब देख नहीं सकी और हिम्मत हारने लगी और कमजोर पड़ गई| जब तू इस दुनिया में आया, तुझे जन्म देते ही तेरी मां चल बसी|

युवराज – लेकिन नानी मेरे बाबा सुरंग की खुदाई करने ही क्यों गए ? मेरे बाबा के साथ और भी लोग मरे थे क्या ?

नानी – नहीं, केवल तेरे बाबा ही उस सुरंग की खुदाई कर रहे थे| तेरे बाबा बहुत महान और मेहनती इंसान थे, वो सभी का भला सोचते थे| उनका सुरंग बनाने का मकसद केवल एक था, कोई भी इंसान उस दुःख का सामना न करे जिसका तेरे बाबा ने किया है |

युवराज – कौनसा दुःख नानी ?

नानी – जब तेरे बाबा के मां बाबा मतलब तेरे दादा और दादी, किसी बड़ी बीमारी से जूझ रहे थे तब तेरे बाबा उनको बारी – बारी से अपनी पीठ पर बिठा कर गांव से दस किलोमीटर दूर शहर के अस्पताल ले जाता था| पहाड़ों की ऊंचे – नीचे रस्ते होने के कारण समय भी ज्यादा लगता था और पैसे की कमी से किसी अच्छे अस्पताल में इलाज करवाना भी नामुमकिन था|

एक दिन जब तेरे बाबा घर लौटे तो देखा कि तेरे दादा और दादी मूर्छित होकर पड़े थे, तेरे बाबा ने दोनों पर पानी की छीटें डाली, उनको थोड़ा होश में लाया| बाबा ने पहले अपनी मां को पीठ पर बिठाया और जल्दी से अस्पताल लेकर गया| फिर तेरे दादा को पीठ पर बिठाकर चल दिया| लेकिन…

(इतना कहकर नानी चुप हो जाती है)

युवराज - लेकिन क्या नानी…

नानी - लेकिन बीच रस्ते में ही तेरे दादा ने दम तोड़ दिया | तेरे बाबा ने उन्हें उठाने की बहुत कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ | फिर भी तेरे बाबा ने हार नहीं मानी वो उनको अस्पताल लेकर पहुंचा , लेकिन वहां भी दुखों का पहाड़ टूट पड़ा|

वहां जाकर पता चला कि मां भी उन्हें छोड़ कर चलीं गई| तेरे बाबा ने फैसला किया वो ऐसा रास्ता बनाएंगे जो कम समय में शहर जल्दी पहुंचा दे, किस्मत ने उनका कभी साथ नहीं दिया | (नानी इतना कहकर रोने लगती है, युवराज नानी को प्यार से सहलाता है)

नानी रोते हुए – तेरे बाबा अपने वादे के पक्के थे जो बोलते थे वो कर के दिखाते थे, लेकिन इस बार किस्मत उनके पक्ष में नहीं आई |

तेरे बाबा ने लोगों को उस दुःख से दूर रखने के लिए अपना जीवन दान कर दिया |

(नानी फुट – फुटकर रोने लगती है)

युवराज – शांत हो जाओ नानी, मै हु न … मै करूंगा बाबा का सपना पूरा|

(छः साल बाद)

युवराज अब 21 साल का हो चुका था| हमेशा की तरह युवराज रोज सुबह काम के लिए निकल जाता था| एक दिन जब वो काम के लिए जा रहा होता है तभी रास्ते में उसकी नजर एक लड़की पर गिरती है, जो चोरी - चुपके से फूल तोड़ रही थी| युवराज की नजर उस कर अड़ी रह जाती है, वो लड़की अपने शरीर को ऊपर की तरफ खींचकर, पंजों पर खड़ी होकर फूल तोड़ रही थी|

युवराज उसके पास जाता है और कहता है - क्या मैं कुछ मदद करूं ?

लड़की अपनी धुन में मगन होकर फूल तोड़ रही थी , अचानक से आवाज कानों में पड़ने पर डर जाती है और हड़बड़ाते हुए नीचे गिर जाती है| नीचे गिरने से एक कांच का टुकड़ा उसके पैर में चुभ जाता है और खून बहने लगता है | नाजुक लड़की दर्द से चीखने लगती है| युवराज उसे चुप होने के लिए कहता है और अपने गमछे से एक टुकड़ा फाड़कर उसके पैर पर बांध देता है जिससे खून का बहाव रुक जाए | युवराज लड़की से कहता है तुम यही रुकना मै अभी आता हु|

युवराज दौड़कर दवा लेकर आता है और प्यार से उसके पैर की चोट पर लगाता है | लड़की दर्द से कराहने लगती है |

युवराज – ज्यादा दर्द हो रहा है ?

लड़की – हां |

युवराज – मेरी आंखों में देखती रहो, फिर नहीं होगा |

लड़की – क्यों ? तुम कोई जादूगर हो ..

युवराज – नहीं , लेकिन शायद ऐसा करने से दर्द नहीं होगा |

(लड़की युवराज की आंखों में लगातार देखती रहती है)

युवराज उसकी आंखों के सामने हाथ हिलाता है और नज़रे हटाने के लिए इशारा करता है |

युवराज – हे ! आंखों में थोड़ी देर देखने को बोला था, इनमें डूब जाने को नहीं |

(लड़की मुस्कुराती है)

युवराज - वैसे…… चोरी – चुपके से फूल क्यों तोड़ रही थी

लड़की – हां तो क्या करती ….सामने से मालिक फूल तोड़ने कहा देता है

युवराज – क्या करोगी इतने सारे फूल तोड़कर ?

लड़की – माला और हार बनाऊंगी | मुझे पसंद है ये सब पहनना|

युवराज – अच्छा ! ऐसा है क्या |

(लड़की हामी भरती है)

युवराज – अगर तुम्हे इतने ही पसंद है ये माला – हार पहनने तो असली वाले क्यों नहीं

पहनती | ऐसे तो रोज फूल तोड़कर लेके जाओगी अगले दिन तक ये मुरझा

जाएंगे |

(लड़की इधर – उधर देखती हुई कहती है “ ऐसी किस्मत कहा है मेरी जो

असली हार पहन सकू|

(मुंह बनाकर बैठ जाती है)

युवराज – अगर मैं पहना दु तो.... चलेगा ?

लड़की – हां – हां ! इतनी लंबी न हांको तो ही सही रहेगा |

युवराज – हे ! ऐसा मत बोलो समझी |

मैं अपने बाबा की तरह वादे का पक्का हु |

(दोनों आपस में बात करते रहते है, युवराज अपने मां – बाबा के बारे में सब बताता

है | ऐसे में युवराज का सारा दिन उस लड़की के साथ ही गुजर जाता है |

(शाम होते ही)

युवराज – अरे ! शाम हो गई अब शायद हमे चलना चाहिए | मुझे अपनी नानी को खाना

भी खिलाना है |

लड़की – हम्मम्म “ मेरी दादी मां भी मेरी राह देख रही होगी |

(दोनों अपने – अपने रस्ते पर जा रहे होते है कि लड़की पीछे मुड़कर आवाज लगाती है – वैसे नाम क्या है आपका ?

युवराज – “मेरा युवराज | प्यार से सब युवी बुलाते है |

ओर आपका ?

लड़की – सुनैना |

युवराज – ठीक है सुनैना | मिलते है कल

(युवराज खाना लेकर घर पहुंचता हैं और नानी को गले से लगाकर कहता है – नानी

आज मैं बहुत खुश हूँ |

नानी – अच्छा ! ऐसी क्या बात है ?

युवराज – नानी मै न आज .... (युवराज इतना कहकर मंद मंद मुस्कुराने लगता है)

नानी – अरे बेटा कुछ बताएगा भी या नहीं

(युवराज उतावला होकर कहता है – नानी आज मैं एक शहजादी से मिलकर आया हूं|

नानी – शहजादी? कौन शहजादी....

युवराज – हां – हां नानी शहजादी|

उसकी प्यारी – प्यारी आंखे , सुंदर घने बाल , मधुर आवाज…..उम्ममम

नानी जैसे रात में वो दिनों तारे चमकते है ठीक उसी तरह उसका चेहरा भी चमक रहा था|

नानी – युवी बेटा ये प्यार का भूत सिर से उतार दे, ये सुंदर औरत किसी की सगी नहीं होती है|

पसंद करना है तो किसी मेहनती लड़की को कर जो तेरा सहारा बने…

(नानी बोल ही रही होती है कि युवराज बीच में ही अपनी बात रखता है)

युवराज – ओहो नानी ! बस भी करो अब |

सुनैना ऐसी लड़की नहीं है, तुम्हे पता है वो मुझसे कितने प्यार से बात कर रही थी |

अगर सुनैना ऐसी लड़की होती तो वो मेरे फटे कपड़े देखकर वहां से तुरंत चली जाती,

वो मेरे पास बैठती ही क्यों….

(इतना कहकर युवराज थोड़ी देर चुप हो जाता है | फिर कहता है – ओर तो ओर

उसने मुझे छुआ भी था नानी , वो सच में अच्छी लड़की है।

नानी - हां – हां ठीक है….

युवराज – नानी मै कल उसे अपने घर लेकर आऊंगा, आप देखना नानी वो बहुत खूबसूरत है।

(दोनों खाना खाने के बाद सोने चले जाते है)

अगली सुबह युवराज जल्दी ही उठ जाता है। खाना तैयार कर के दवाईयां और खाना नानी के पास रख देता है। युवराज नानी के बिस्तर से एक धागा काट कर अपने पास रख लेता है और पहाड़ की तरफ निकल जाता है। युवराज वही पहुंच जाता है जहां वो कल सुनैना से मिला था। वो दबे पांव से फूलों की बेल की तरफ बढ़ता है और चुप चाप फूल तोड़ने लगता है, उसने अधिकतर फुल तोड़ ही लिए थे कि वहां के मालिक का पालतू कुत्ता युवराज को भौंकने लगता है। कुत्ते की आवाज सुनकर मालिक की नींद खुल जाती है और लाठी लेकर युवराज के पीछे दौड़ता है। युवी बचने के लिए तेजी से भगा लेकिन पालतू कुत्ते ने पीछे से नोच लिया। युवी एक पत्थर उठाता है कुत्ते पर दे मारता है। वो अपनी जान बचाकर भग तो आता है लेकिन कुत्ते के अधिक काटने पर युवराज दर्द से कराहने लगता है। एक पेड़ के नीचे बैठकर घाव को देखते हुए कहता है – हाय सुनैना तेरा हार तो बहुत महंगा पड़ गया रे मुझे। युवराज पास ही से कुछ जड़ी बूटियों को पिस कर घाव पर लगाकर अपने गमछे से बांध लेता है।

युवराज सोचता है क्यों न शहर जाकर दवा ले आऊ.....लेकिन वो ऐसा नहीं करता क्योंकि उसने ठान लिया था कि वो सुनैना को असली हार पहनाकर ही उसे दिल की बात कहेगा।

फूलों से युवराज जल्दी से हार बनाता है और सुनैना के आने का इंतजार करता है। थोड़ी देर बाद सुनैना की झलक दिखाई पड़ती है। आज सुनैना लाल कपड़ों में ओर भी ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। युवराज जल्दी से एक बड़े पत्थर के पीछे छुप जाता है। सुनैना इधर उधर नजर घुमाती है लेकिन युवराज कही दिखाई नहीं देता। सुनैना आवाज लगाती है –

(मधुर आवाज में) युवराज ……युवराज कहा हो तुम…

युवराज एक पत्ता लेकर मधुर आवाज निकालता है और एक शेर से खुद पेश आता है –

“ प्यार से देखो सुनैना हम आशियाना यही बिछाए बैठे है

दीदार को तेरे कब से पलके अड़ाए बैठे है

ढूंढोगी तो बहुत दूर हु मैं

महसूस करो तो पास हु मैं

थोड़ा गौर से देखो सुनैना हम एक बड़े पत्थर के पीछे तुम्हारा हार सजाए बैठे है”

(सुनैना उस पत्थर के पीछे युवराज को ढूंढ लेती है) ओह ! तो तुम यहां छुपे बैठे हो

युवराज - (धीमी आवाज में बोलता है) जान निकालने का इरादा है क्या…

सुनैना - क्या ? …. क्या कहा अभी तुमने..

युवराज – (मुस्कुराते हुए) अरे कुछ नहीं ….इसे आज बहुत खूबसूरत लग रही हो।

सुनैना – ओह! वैसे शायरी अच्छी कर लेते हो तुम….

युवराज – ओह शुक्रिया !

सुनैना - कहां से सीखी है तुमने ये …….

युवराज - कहा से मतलब।

मैने खुद लिखी है, तुम्हारे लिए।

सुनैना – सच में तुमने लिखी है?

युवराज – हां – हां , कोई संदेह। पता नहीं मेरे अंदर से ही एक भावना उमड़ के आती है जो मुझे

लिखने के लिए उत्साहित करती है। खैर छोड़ो ये सब….. वैसे आज इतना संवरने का कारण जान सकता हु क्या है ?

सुनैना - हम्मम्मम क्यों नहीं ! पहले ये बताओ कि तुम इस दुनिया में कब आए ….

युवराज – क्या तुम मेरे जन्मदिन के बारे में बात कर रही हो ?

सुनैना – हम्मम्मम।

युवराज – 7 फरवरी

सुनैना – ओ – ओ 7 फरवरी। फिर तो 7 फरवरी तुम्हारा खास दिन होगा…हैना

युवराज – हम्मम्मम…लेकिन कुछ ज्यादा खास नहीं।

सुनैना – ओह तो अब तुम खुद अंदाजा लगा सकते हो मैने ये प्रश्न क्यों किया..

युवराज – (थोड़ा सोचते हुए) अम्मम…. कहीं आज हमारी शहजादी का जन्मदिन तो नहीं…

(सुनैना मुस्कुराती है)

(युवराज सुनैना को एक दम से बाहों में उठा लेता है) – ओहो जन्मदिन मुबारक हो सुनैना।

(युवराज झट से सुनैना को नीचे उतार देता है – ओह माफ करना ...मै वो कुछ ज्यादा ही खुश हो गया था)

सुनैना – हम्ममम कोई नहीं ....

युवराज – तो बताइए सुनैना जी आपको क्या तोहफा चाहिए जन्मदिन पर।

सुनैना – हाहाहाहाहा तुम नहीं दे पाओगे युवी।

युवराज – हे ऐसा मत बोलो, मै कुछ भी कर सकता हु तुम्हारे लिए ।

सुनैना – (हंसती है) ओह अब बस भी करो युवी। कल ही तो मिले थे हम| और अभी से इतनी

लंबी लंबी हांकने लगे। मेरे ख्यालात, इच्छाएं बहुत महंगी है युवी तुम्हारी सारी जिंदगी

गुजर जाएगी पूरा करते करते।

युवराज – जैसा तुम समझो । लेकिन एक बात हमेशा याद रखना मै अपने वादे का पक्का हु

बिलकुल बाबा की तरह ।

अरे हा मैं कुछ लाया था तुम्हारे लिए...(युवराज बोलता ही है तभी सुनैना बीच में अपनी

बात रखती है – अगर ऐसा है तो मुझे वही चाहिए जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है, सोच

लो अब तुम खुद क्या हो सकता है।

(युवराज फूलों से बने हार को पीछे ही हाथों में दबोच लेता है क्योंकि युवराज समझ गया था कि सुनैना असली हार की बात कर रही है)

सुनैना – हनन तुम कुछ लाए थे मेरे लिए.....क्या है दिखाओ ।

युवराज – ओ वो....कुछ नहीं ऐसे ही। युवराज बात टालने के लिए सुनैना को एक फूल देता है।

सुनैना – बताओ युवी मुझे क्या पसंद है....

युवराज – थोड़ा इंतजार करो ....जल्दी ही वो तोहफा तुम्हारे सामने होगा जो तुम्हे बेहद पसंद है।

सुनैना – ओह ऐसा क्या....ठीक है मैं इंतजार करूंगी।

युवराज – अच्छा सुनैना मेरी नानी तुमसे मिलना चाहती है। क्या तुम मेरे साथ मेरे घर चलोगी?

सुनैना – हां – हां क्यों नहीं।

(युवराज, सुनैना को अपने घर ले जाता है)

युवराज - नानी । देखो कौन आया है .... सुनैना आई है सुनैना।

(नानी मुस्कुराते हुए सुनैना की तरफ प्यार से देखती है)

युवराज – नानी अब भी तुम यही कहोगी न कि सुंदर औरत किसी की सगी नहीं होती। देखो अब तो सुनैना अपने घर भी आ गई।

युवराज, सुनैना और नानी आपस में बाते करते है थोड़ी देर बाद युवराज कहता है – "अच्छा नानी अब मैं काम के लिए निकलता हु। आज से दोगुना ज्यादा कमाना पड़ेगा मुझे"।

(युवराज सुनैना की तरफ देखकर मुस्कुराता है)

चलो सुनैना मै तुम्हे घर तक छोड़ दूंगा।

सुनैना हामी भरती है और दोनों साथ चले जाते हैं।

(रस्ते में)

युवराज - सुनैना क्या तुम मेरा एक काम करोगी ?

सुनैना – हां बोलो।

युवराज – शाम को मै तुम्हे इसी जगह खाना देने आऊंगा वो तुम मेरे घर मेरी नानी तक पहुंचा देना।

सुनैना – हां ठीक है। मैं आ जाऊंगी

सुनैना अपने रस्ते चली जाती है और युवराज काम के लिए। शाम तक काम करने के बाद युवराज खाना लेकर उसी जगह आ जाता है जहां उसने सुनैना को आने के लिए बोला था।

थोड़ी देर बाद सुनैना भी आ जाती है। युवराज खाना देकर वापिस जाने लगता है सुनैना आवाज देती है " अब कहा जा रहे हो युवी"।

युवराज – (हिचकिचाते हुए) अअअ…..वो कही नहीं नानी की दवा लानी है, खत्म हो गई तो वहीं लाने जा रहा हु। तुम खाना पहुंचा देना नानी के पास ठीक है।

युवराज वास्तव में कोई दवा नहीं लेने जा रहा था। वो शहर में कोई अच्छा काम ढूंढना चाहता था जिससे वो अच्छा पैसा कमा सके और सुनैना को असली हार खरीद कर दे सके।

युवराज शहर में काम की तलाश में घूमता रहता है परन्तु उसे कोई काम नहीं मिला। निराश होकर युवराज घर की तरफ मुंह कर लेता है।

कुछ दिनों तक युवराज ऐसे ही काम के लिए भटकता रहता है। फिर एक दिन जब युवराज अपनी नानी की दवाईयां लेने अस्पताल पहुंचा उसने डॉक्टर से अस्पताल में कुछ काम देने के लिए गुजारिश की। पहले तो डॉक्टर ने काम देने से मना कर दिया परन्तु बाद में युवराज को अस्पताल में देखभाल और सामान को व्यवस्थित करने का काम मिल गया।

युवराज अब दिन – रात मेहनत करता और एक – एक पैसा जोड़ने लगा। समय बीतता गया डॉक्टर को युवराज का किया हुआ काम पसंद आने लगा। एक दिन डॉक्टर, युवराज को अपने पास बुलाता है और दिन रात मेहनत करने की वजह पूछता हैं।(युवराज और डॉक्टर के बीच अच्छा संबंध बन गया था) युवराज उनको अपना अतीत , वर्तमान और इच्छाएं बतलाता है। वो अपने और सुनैना के बीच के रिश्ते को भी बताता है। डॉक्टर, युवराज का साथ देने के लिए हाथ बढ़ाता है। युवराज अब और भी लग्न के साथ काम करने लगा।

(एक दिन)

सुनैना, युवराज से उसके काम के बारे में पूछती है क्योंकि युवराज अब शहर में काम करने लगा था। सुबह जल्दी जाता और अंधेरी रात में घर वापिस आता था। सुनैना एक दिन युवराज से शहर घूमने की जिद्द करती है। युवराज सुनैना को शहर घुमाता है और अस्पताल में ले जाता है, जहां वो काम करता था। वहां युवराज, सुनैना को डॉक्टर से मिलवाता है।

दिन बीतते गए सुनैना अब अक्सर युवराज के साथ शहर आया जाया करती थी।

ऐसे करते 1 साल गुजर गया। दो दिन बाद सुनैना का जन्मदिन था, युवराज मेहनत से जोड़े हुए पैसों से सुनैना के लिए हार और कंगन लेता है, वही लाल ड्रेस जिसमें युवराज, सुनैना को देखना अधिक पसंद करता है वो खरीद लेता है , अपनी नानी के लिए अच्छी सी साड़ी खरीदता है और घर के लिए निकल जाता है।

घर पहुंचने के बाद युवराज नानी को उनकी साड़ी हाथ में थमाता है। दोनों बहुत खुश थे।

थोड़ी देर बाद युवराज लाल ड्रेस लेकर सुनैना के घर की ओर निकल जाता है। सुनैना बाहर बैठी बच्चों के साथ खेल रही थी।

युवी इशारे से सुनैना को पास बुलाता है और हाथ ले ड्रेस पकड़ाते हुए कहता है “ ये कल सुबह पहनकर जल्दी आना , मै उसी बड़े पत्थर के पास तुम्हारा इंतजार करूंगा। एक प्यारी सी मुस्कान देकर युवी वहां से आ जाता है।

(अगली सुबह)

युवराज पत्थर के पास सुनैना के आने का इंतजार कर रहा था। सुनैना परियों सी चमचमाती आती हुई दिखाई देती है।

युवराज अपने दिल पर हाथ रखकर खड़ा हो जाता है, मानो जैसे दिल जबरदस्ती बाहर निकल रहा हो।

युवराज – जन्मदिन मुबारक हो हुस्न – ए – परी

सुनैना – (मुस्कुराते हुए) बस बस इतनी भी सुंदर नहीं हु मैं। खैर शुक्रिया

युवराज – अपनी आँखें बंद करो।

सुनैना आंखें बंद कर लेती है। युवराज प्यार से सुनैना को हार पहनाते हुए कहता है " शायद तुम्हे ये पसंद आए"।

सुनैना आंखें खोलती है और आश्चर्य चकित होकर कहती है “ युवी ……युवी तुम सच में हार ले आए।

युवराज – कहा था न वादे का पक्का हु।

सुनैना खुश होकर युवराज को गले लगा लेती है, लेकिन युवराज अपने दोनों हाथ दूर रखता है। उसकी सांसे सहम जाती है। युवराज को सपने ओर हकीकत में कोई फर्क नजर नहीं आ रहा था।

(थोड़ी देर बाद)

युवराज – सुनैना……

सुनैना – हां बोलो ।

युवराज – वो……. वो…

सुनैना – बोलो बोलो युवी….

युवराज – सुनैना …..वो … कुछ कहना है लेकिन हिम्मत नहीं है।

सुनैना – ओह ! मेरी आंखों में देखते हुए बोल दो…हिम्मत मिलेगी ।

युवराज – हुह….मेरी लाइन मुझ पर ही मार रही हो अच्छा है।

वो कहना ये था कि….मै तुम्हे पसंद करता हु। माफ करना सुनैना लेकिन मैने ये

बात बोलने के लिए इस पल का बेसब्री से इंतजार किया है।

सुनैना - (मुस्कुराते हुए) सच्ची। मुझे भी तुम पसंद हो।

युवराज – (अंदर ही अंदर बहुत खुश था) लाओ तुम्हारा हाथ दो ।

सुनैना – हाथ लेकिन क्यों....

युवराज - अरे ! आगे तो लाओ हाथ ।

सुनैना हाथ आगे बढ़ाती है, युवराज सुनैना को कंगन पहना देता है।

युवराज – सुनैना मै तुम्हे अपनी दुनिया में हमेशा हमेशा के लिए लाना चाहता हु। क्या तुम मेरे

साथ खुश हो.....

सुनैना – हां युवराज, बहुत खुश हूँ।

युवराज – सुनैना। क्या तुम मुझसे शादी करोगी ?

सुनैना शरमाते हुए उठकर एक पेड़ के पास खड़ी हो जाती है । युवराज, सुनैना की तरफ से हा समझता है।

धीरे धीरे युवराज और सुनैना की प्रेम कहानी बढ़ती चली जाती है। सुनैना जो कुछ भी पसंद करती, जो कुछ मांगती, युवराज उसे बिना हिचकिचाए ले आता था। सुनैना की हर इच्छा पूरी करता था। युवराज काम में ज्यादा व्यस्त होने के कारण वो दोनों कभी कभार रात में छुपकर मिला करते थे। युवराज अपनी परवाह न करते हुए बस सुनैना की सारी इच्छा पूरी करने में लगा रहता। युवराज किसी भी कीमत पर सुनैना को दुखी नहीं देख सकता था।

इसके चलते युवराज की तबियत भी बिगड़ जाया करती थी।

सुनैना और युवराज को साथ में पाँच साल हो चुके थे।

(फिर एक दिन)

युवराज - सुनैना। क्यों न हम शादी कर ले, क्योंकि नानी भी अब बीमार रहने लग गई। मैं काम में व्यस्त रहता हु इसलिए उनकी देखभाल ठीक से नहीं कर पाता।

सुनैना - (हैरानी से) क्या शादी?

युवराज – क्या हुआ तुम चौक क्यों गई……कुछ गलत कहा

सुनैना – नहीं। लेकिन बाबा राजी नहीं होंगे।

युवराज – लेकिन क्यों सुनैना…..

मैं अच्छा कमाता हु और तुम्हारा ख्याल भी अच्छे से रखता हु। तुम्हारी हर इच्छा

पूरी करता हु ओर क्या चाहिए। हर पिता यही चाहता है कि उसकी बेटी खुश रहे बस।

सुनैना – हां युवी लेकिन…..

युवराज – लेकिन क्या…..

तुम बोलो बस मैं सब कुछ करने को तैयार हु।

सुनैना – युवी…….लेकिन तुम्हारे पास रहने के लिए अच्छा घर नहीं है। ये देखकर बाबा किसी भी

हाल में राजी नहीं होंगे।

युवराज ये सुनकर खामोश हो जाता है और अपने दिल की बात को अंदर ही निगल जाता है।

……(थोड़ी देर बाद)

युवराज – और अगर मैं अच्छा सा एक नया घर खरीद लू। तब तो बाबा मान जाएंगे न सुनैना

हनन बोलो…..

सुनैना – शायद….. मै कर लूंगी बात बाबा से , तुम चिंता मत करो । मैं हु ना

तुम्हारे सिवा किसी और को बिल्कुल भी पसंद नहीं करूंगी।

ये सुनकर युवराज की आंखों में आंसु आ जाते है और सुनैना को गले लगा लेता है।

युवराज अब चिंता में डूबा रहने लगा, कही वो सुनैना को खो न दे। कहा से आयेंगे इतने पैसे की नया घर खरीद सकू। एक दिन युवराज जब घर लौट रहा था तब रस्ते में उसका दोस्त वीरू मिलता है। युवराज का चेहरा उतरा हुआ देख कर वीरू बोलता है " कैसे हो युवी ? आजकल काम में सिर ज्यादा ही बांध रखा है ।

युवराज – (उदास मन से) हां वीरू।

वीरू – क्या हुआ , तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है।

तुम्हारी नानी ठीक तो है न।

युवराज – दवाईयां चल रही है और कुछ कह नहीं सकता.... मुझे समझ नहीं आ रहा नानी की

देखभाल करूं तो कमाएगा कौन और कमाने जाऊ तो नानी का ख्याल कौन रखे। बस यही चिंता मुझे रात दिन खाए जा रही है।

वीरू – अरे ! युवी तुमने इतना तो कमा रखा है। तुम नानी की ही देखभाल क्यों नहीं करते ।

युवराज – वीरु कमाने का मतलब केवल पैसा नहीं है। मेरी कमाई एक रिश्ता है न कमाने जो तो वो छूट जाएगा और कमाने गया तो नानी ।

अब तू ही बता आखिर क्या करु।

वीरू – कौनसा रिश्ता टूटने की बात कर रहा है ?

(युवराज शुरुआत से लेकर सब बताता है)

वीरू – ओह ! युवराज अगर बुरा न माने तो एक बात बोलूं।

युवराज – हां कहो न ।

वीरू – मुझे वो लड़की ठीक नहीं लगती तेरे लिए ।

युवराज – ठीक नहीं लगती…….क्या मतलब ।

वीरू – मतलब ये युवी अगर वो तुमसे सच्चा प्यार करती है तो तुम्हे इतने दुख में देखना

बिल्कुल भी पसंद नहीं करेगी। (थोड़ा रुककर) अच्छा ये बता क्या उसे मालूम है कि तू

किस तरह पैसे कमाता है और कितनी मेहनत करता है।

युवराज – नहीं। वो नहीं जानती इस बारे में।

वीरू – कभी पूछा भी नहीं उसने…..

युवराज – नहीं । लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि वो गलत है या फिर वो मुझसे प्यार नहीं

करती।

वीरू – समझता हु युवी लेकिन मेरे मन में ऐसा ख्याल आया तो बोल दिया।

खैर तू एक काम कर तुम्हारी नानी का ख्याल मै रख लिया करूंगा। मैं तेरा दोस्त हु ये

मत भूल समझा। तुमने भी तो मेरा बहुत साथ दिया है।

(युवराज वीरू को गले से लगा लेता है और धन्यवाद कहता है)

वीरू – अरे ओ मजनू….. ये धन्यवाद मत बोल समझा। मैं कोई अहसान नहीं कर रहा तुझ पर।

युवराज अब घर नहीं जाता था , दिन रात वही अस्पताल में काम करता। एक दिन युवराज सुनैना को एक खत लिखता है……….

हेलो सुनैना, कैसी हो…..

मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है, मुझे पता है तुम भी यादों में नींद को भुलाए बैठी हो लेकिन क्या करु मैं थोड़ा काम में व्यस्त हु। जल्दी ही आऊंगा तुमसे मिलने ।

मैं ये सब हमारे लिए कर रहा हु, मेरी तरह तुम्हे भी उस पल का बेसब्री से इंतजार होगा जब तुम्हारा मेहंदी से रंगा हाथ मेरे हाथ में होगा, हम भी अग्नि के सात फेरे लेंगे और उसके बाद तुम हमेशा हमेशा के लिए मेरी हो जाओगी और मैं तुम्हारा ।

कितना हसीन होगा न ये पल बिल्कुल तुम्हारी तरह

“आसमां में तारों का अजीब सा शोर होगा”

“अंधेरी रात में चमचमाते तारे और खिले फूलों से भोर होगा”

“शर्म से ढक लेगा पल्लू से खुद को आसमां का वो चांद”

“क्योंकि असली नूर तो मेरे चांद पर ही सुरूर होगा”

जल्दी ही आऊंगा सुनैना मेरा इंतजार करना और हा नानी की देखभाल करते रहना ।

ख्याल रखना अपना।

(कुछ दिनों बाद)

युवराज अस्पताल में एकांत में शांत बैठा हुआ था। डॉक्टर उसे आवाज लगाता है लेकिन युवराज को सुनाई नहीं देता, डॉक्टर फिर से दो बार आवाज लगाता है फिर भी युवराज कोई भाव व्यक्त नहीं करता। तब डॉक्टर उसके पास जाकर आवाज लगाता है। युवराज एक दम से हड़बड़ाते हुए उठता है।

डॉक्टर – कौनसी गहरी सोच में डूबे हुए हो।

युवराज – कुछ नहीं.....वो ऐसे ही।

डॉक्टर – ऐसे ही क्या..... मै देख रहा हु तुम्हे कुछ दिनों से काम पर ध्यान कम दे रहे हो।

युवराज – ओह ! माफ करना।

डॉक्टर – आखिर बात क्या है।

डॉक्टर के तीन से चार बार पूछने पर युवराज अपनी मजबूरी बतलाता है।

युवराज – समझ नहीं आ रहा जोड़े हुए पैसों से बाबा का लोगो को अच्छी सुविधाएं देने का सपना पूरा करु या फिर सुनैना का।

डॉक्टर – ओह ! इसमें चिंता की क्या बात है। परेशान मत हो सब हो जाएगा।

युवराज – लेकिन कैसे। कहां से लाऊंगा मैं इतने पैसे और अगर में पैसे जोड़ कर घर ले भी लिया क्या पता तब तक सुनैना के बाबा उसका कही

ओर रिश्ता............. नहीं नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं अपनी नानी के सामने बाबा का सपना पूरा करना चाहता हु।

डॉक्टर – चिंता मत करो, कल शहर से बाहर हमे एक मरीज के दिल का ऑपरेशन करने के लिए जाना है।

युवराज – हां तो उसमें मैं क्या करूंगा...

डॉक्टर – तुम मेरे साथ चलोगे। आते समय मैं तुम्हे घर दिखाने ले जाऊंगा जो पसंद आए वो खरीद लेना।

युवराज – लेकिन पैसे......

डॉक्टर – पैसों की चिंता मत करो।

मेरे बाबा कहते थे मुझसे की पैसे किसी की जान से बढ़कर नहीं होते है।

युवराज की आंखे भर आती है और डॉक्टर के पैरों में झुक जाता हैं। डॉक्टर, युवराज को उठाता है मैं और गले से लगा लेता है।

अगले दिन युवराज और डॉक्टर ऑपरेशन के लिए निकल जाते है। युवराज और डॉक्टर शहर के किसी हॉटेल में ठहरे हुए होते है। डॉक्टर, युवराज से ऑपरेशन का बोलकर जाने लगता है और कहता है – तुम यही रहना मै ऑपरेशन करते ही तुम्हे लेने आ जाऊंगा।

दो दिन बीत गए लेकिन डॉक्टर उसे लेने अभी तक नहीं आया। हॉटेल का मालिक दो दिन पूरे होने के बाद युवराज से कमरा खाली करने को कहता है। युवराज हॉटेल के मालिक से विनती करता है कि उसे डॉक्टर के आने तक यही ठहरने दे। लेकिन युवराज को वहां से बाहर निकाल दिया जाता है।

युवराज को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने डॉक्टर को आस पास के सभी अस्पतालो में ढूंढा लेकिन कही नहीं मिले। उसे लेने डॉक्टर जरूर आएगा इस उम्मीद में वहां चार दिन बीत गए। युवराज अभी भी वहीं भटक रहा था। जैसे तैसे युवराज रास्ता पूछते हुए आगे बढ़ता है। भूख लगने पर युवराज ठेले पर चाय पीकर काम चलाता। वह चाहकर भी एक पैसा खर्च करने को तैयार नहीं था।

छः दिन बीत गए, युवराज अपनी गांव की सीमा लांघ चुका था। सबसे पहले युवराज शहर के उस अस्पताल में जाता है जहां वो काम किया करता था, वहां पहुंचकर डॉक्टर के बारे में पूछता है। अस्पताल से उसे खबर मिलती है कि डॉक्टर तो अपनी खुद की शादी में गया है। चार दिन पहले डॉक्टर की शादी हुई है।

युवराज के चेहरे का बचा हुआ नूर भी हट गया था। वो चिंतित होकर गांव की ओर दौड़ने लगता है। गांव में पहुंचते ही सभी लोग युवराज को कोसने लगते है। युवराज हैरानी से सभी की ओर देखता है और भागता हुआ अपने घर जाता है। लेकिन वहां कोई नहीं था। बर्तन और कपड़ो पर धूल जमी हुई थी। युवराज इधर उधर निगाहे घुमाता है, नानी को आवाज देता है। युवराज अब डर गया था कही वो सब नहीं हो गया हो जिस बात को उसे डर था। युवराज अपनी नानी को वीरू के देख – रेख में छोड़ कर गया था, उसे लगा कि शायद नानी को वीरू अपने घर ले गया होगा। युवराज लड़खड़ाता हुआ वीरू के घर पहुंचा, जहां वीरू पैर में लगी चोट पर दवा लगा रहा था। सामने युवराज को देख वीरू की आंखें भर आती है। वीरू खड़ा होकर युवराज को जकड़कर गले लगा लेता है, युवराज हाथ झड़काते हुए वीरू से नानी के बारे में पूछता है……

वीरू खामोश होकर रोने लगता है। क्या हुआ है ये समझाने के लिए युवराज को ये काफी था। अपना सिर पकड़कर जमीन पर बैठ जाता है और नानी को याद करते हुए रोने लगता है।

युवराज खुद को कोसते हुए कहता है – मैं ही हु बदकिस्मती वाला इंसान, जो किसी काम का नहीं हु.........मै बाबा का सपना पूरा नहीं कर पाया नानी......मुझे माफ कर देना।

(युवराज सिर पटक पटक कर रोने लगता है) वीरू उसे संभालते हुए कहता है ऐसा नहीं है वीरू, नानी को भरोसा था तुझ पर। उन्होंने जाते समय पता है क्या कहा कि मेरे बाद युवी का तुम ख्याल रखना, वो अपने बाबा का सपना पूरा करके ही लौटेगा। तू अब भी कर सकता है युवराज।

(युवराज अचानक खड़ा हो जाता है) और सुनैना, मेरी सुनैना कैसी है। इतना कहकर युवराज सुनैना के घर की तरफ दौड़ने लगता है| वीरू उसे आवाज लगाता है “ युवराज....... युवराज रुको। वहां कोई नहीं है अब तेरा, युवराज मेरी बात सुनो।

लेकिन युवराज उसकी एक नहीं सुनता वीरू भी उसके पीछे पीछे चल जाता है।

(सुनैना के घर)

सुनैना घर के बाहर खड़ी थी, युवराज झट से सुनैना को गले लगाकर रोने लगता है। सुनैना उसे धक्का देकर दूरी बनाती है।

युवराज सोचता है कि वो इतने दिनों तक आया नहीं शायद इसलिए सुनैना नाराज है।

युवराज – (हड़बड़ाते हुए) ……सुनैना ऐसा नहीं जैसा तुम सोच रही हो।

मुझे……मुझे वो डॉक्टर किसी बड़े ऑपरेशन के बहाने अपने साथ ले गया और मुझे छोड़ आया सुनैना। सुनैना………. सुनैना मै तुमसे सच में प्यार करता हु सुनैना। बहुत मुश्किल से यहां आया हु। मैं भटक गया था वहां शहर की गलियों में ।

युवराज की आँख से पानी रुकने का नाम नहीं ले रहे था, बेबस होकर युवराज, सुनैना

के पैरो में गिर गया। युवराज आगे कुछ बोलता तभी वहां डॉक्टर हरीश , सुनैना के घर से बाहर आता है। “ सुनैना क्या हो रहा है ये सब इतना शोर किस लिए…..

युवराज जैसे ही अपनी गर्दन ऊपर उठाई सामने डॉक्टर हरीश को देख भौचक्का रह गया ।

युवराज – डॉक्टर तुम यहां……. मुझे वहां शहर से लाना भूल गए क्या ।

डॉक्टर – (मुंह बनाते हुए) हुह्ह मुझे पालतू जानवर पसंद नहीं।

डॉक्टर अपने हाथ सुनैना के कंधों पर रख लेता है। ये देख युवराज क्रोधित होकर डॉक्टर की तरफ बढ़ता है तभी पीछे से वीरू उसे रोक लेता है।

वीरु – जैसा तुम समझ रहे हो युवी वैसा कुछ नहीं है। क्या तू पागलों की तरह सुनैना सुनैना नाम का जाप करता रहता था हकीकत में वो तेरी सुनैना है ही नहीं…..

(युवराज के पैरो तले जमीन खिसकती जा रही थी । पीछे मुड़कर वीरू की तरफ देखता है)

वीरू – हां युवी।

छः दिन पहले सुनैना ने इस डॉक्टर हरीश से शादी कर ली। शादी के दिन तुम्हारी नानी

आई थी यहां सुनैना से मिलने। सुनैना को बहुत समझाया वो ऐसा न करे, मेरे बेटे युवी का क्या होगा । वो नहीं रह पाएगा बेटा तुम्हारे बिना।

नानी ने हाथ जोड़ कर सुनैना से तेरे लिए प्यार मांगा था युवी। लेकिन इन लोगों ने नानी को धक्का मारकर बाहर कर दिया। तुम्हारी नानी ये दर्द बर्दाश्त नहीं कर सकी और उन्हें दिल का दौरा आ गया और वो........(इतना कहकर वीरू रोने लगता है)

युवराज एक जिंदा लाश की तरह हो गया। जिसमें सांसे तो थी लेकिन प्रेम – भाव सब मर चुके थे। युवराज के घुटने दम तोड़ रहे थे मानो जैसे उसकी जान घुटनों से निकल रही हो।

तभी वहां सुनैना के बाबा आ जाते है, बाहर हो रहे हंगामे पर प्रशनचिह्न लगाते है।

सुनैना – पता नहीं बाबा ये पागल आदमी कौन है, कुछ भी बोले जा रहा है।

युवराज – (चिल्लाते हुए) पागल भी तुमने ही बनाया है मुझे। क्या – क्या नहीं किया मैने

तुम्हारी खुशी के लिए। कहा – कहा नहीं भटका मै। क्या नहीं खोया मैने तुम्हारे लिए।

अपनी जिंदगी दाव पर लगाए बैठा था सिर्फ तुम्हारे लिए.......

सुनैना के बाबा – अरे! भाई होश में तो हो न तुम ।

युवराज - हां – हां बिल्कुल होश में हु, तुम्हारी बेटी मुझे पसंद थी मैं इससे प्यार करता था और ये मुझसे।

सुनैना – नहीं बाबा ऐसा कुछ नहीं है। मैं जानती तक नहीं इसे।

युवराज – नहीं जानती तो मुझसे मिलने क्यों………(इतना बोलकर युवराज चुप हो जाता है)

क्योंकि वो सुनैना से आज भी उतना ही प्यार करता था, वो नहीं चाहता था कि

उसका प्यार किसी की नजरों से गिर जाए।

सुनैना के बाबा – क्या कहा…….मिलना क्या…

युवराज – कुछ नहीं बाबूजी ……..एक सच्चा आदमी कभी भी अपनी पसंदीदा औरत पर उंगली

नही उठने देगा। (युवराज अपने भीतर चल रही आग ओर गुस्से को जहर की तरह अंदर ही निगल लेता है)

सुनैना – बाबा, तुम अंदर चलो ।

सुनैना युवराज से “ और तुम| आगे कुछ भी बोला तो जान निकाल लूंगी समझे।

युवराज – हां ये ठीक रहेगा। सा*……..कम से कम ये दिल तड़पना तो बंद कर देगा।

इतना कहकर युवराज अपने ग़म को गले लगाकर वापिस लौट आता है। युवराज अंदर से टूट चुका था। उसका हुलिया पागलों की तरह हो गया। युवराज गलियों में भटकने लगा क्योंकि

“ जिस पौधे को युवराज ने प्यार से सींचकर बड़ा किया, बड़ा होकर उसी पौधे ने उसको कांटे दे दिए”। इस बात को युवराज अपने जहन से निकाल नहीं पा रहा था।

2 साल गुजर गए, आज भी युवराज सुनैना की याद में पागल था।

(एक दिन)

युवराज एक नदी के किनारे पेड़ का सहारा लिए बैठा था। वो अपनी डायरी के पन्नों पर कुछ लिखता और उसे फाड़कर हाथों से तोड़ – मरोड़कर गोला बनाकर नदी में फेक रहा था।

ऐसा युवराज लगातार किये जा रहा था। नदी के पास एक घर था जिसमें एक लड़की (रूपाली) और उसकी दादी रहती थी। रूपाली नदी पर पानी

का घड़ा भरने आती है वो जैसे ही घड़ा भरकर ऊपर खींचती है तो एक कागज घड़े में तैर रहा था। रूपाली उसे बाहर निकालती है और आराम से खोलकर पढ़ती है, जिसने दो लाइन लिखी हुई थी……

"पंख काटे है तो एक वार गले पर भी कर देते"

"यू बेसहारा करके उड़ा देने का आखिर ताल्लुक क्या है"

रूपाली को एक और कागज तैरता हुआ आता दिखाई देता है। वह उसे उठाती है और खोलकर पढ़ती है……

"उसे शिकायत है मेरी मोहब्बत पर"

"की हमने उसे चाहा नहीं"

"हमने जितना चाहा उसको"

"शायद कभी किसी ने उसको उतना चाहा नहीं" ।

रूपाली ये पढ़ कर इधर उधर देखती है। नदी में ओर ऐसे कई कागज तैर रहे थे। कागज के आने की दिशा देखकर रूपाली उसकी तरफ आगे बढ़ती है, वो देखती है एक अजनबी आदमी कागज पर लिखकर उनको बहा रहा था। रूपाली उसके पास जाती है और कहती है – कौन हो तुम…

युवराज, रूपाली की तरफ सिर उठाकर भी नहीं देखता। रूपाली नदी में बहाए कागज सामने करते हुए कहती है – लिखते बहुत अच्छा हो तुम।

युवराज वहां से उठकर चलने लगता है, रूपाली दौड़कर उसका रास्ता रोक लेती है और नाम बताने को कहती है। युवराज उसके सामने से हटकर बिना कुछ बोले चलने लगता है। रूपाली फिर उसके सामने आकर खड़ी

हो जाती है। रूपाली देखती है कि उसके हाथ पर चोट लगी है वो उसे छूने के कोशिश करती है लेकिन युवराज अपना हाथ झटके से पीछे करता और चल देता है।

रूपाली पीछे एक शेर करती है.....

"ना कह सकते जुबान से तकलीफ को अपनी"

"हम चेहरे के नूर से अतीत को भांपने का हुनर रखते है" ।

युवराज चार – पाँच कदम चला ही था रूपाली का शेर सुनकर वही कदम रोक देता है।

युवराज पीछे मुड़कर रूपाली की तरफ तिरछी निगाहों से देखता है और "अच्छा है" कहकर चल देता है| रूपाली अपने घर की तरफ जा रही होती है, उसे पेड़ के नीचे एक डायरी दिखाई देती है जहां पर युवराज बैठा हुआ था। रूपाली उसे उठाकर अपने घर ले आती है।

(अगले दिन)

युवराज अपनी डायरी ढूंढने वहां नदी पर आता है। रूपाली नदी पर घड़ा भर रही थी, रूपाली को युवराज दिखाई पड़ता है, रूपाली दिखावा करके वहां से जाने का नाटक करती है।

युवराज उसे आवाज लगाता है – हे सुनो.....

(रूपाली अनसुना कर आगे बढ़ती रहती है)

युवराज – मै तुम्हे ही आवाज लगा रहा हूं।

रूपाली – मै अंजान लोगो से बात नहीं करती।

युवराज – हां मैं करना भी नहीं चाहता। मुझे मेरी डायरी वापिस लौटा दो मैं यहां से चला जाऊंगा।

रूपाली – डायरी। कैसी डायरी.....

युवराज – एक्टिंग अच्छी कर लेती हो, लेकिन मेरे सामने नहीं चलेगी। मुझे मेरी डायरी वापिस करो।

रूपाली – क्या सबूत है कि तुम्हारी डायरी मेरे पास है।

(युवराज मन ही मन रूपाली की चतुराई भांप रहा था)

युवराज – कल तुम मेरे चेहरे के नूर से अतीत को भांप रही थी। तुम्हारे चेहरे का नूर ही मेरी

डायरी तुम्हारे पास होने का सबूत है।

रूपाली – अच्छा ! (रूपाली अपने दांत दिखाते हुए हंसने की एक्टिंग करती है)

अब देखो ....क्या अब भी चेहरे का नूर गवाही दे रहा है।

युवराज – मुझे किसी का वक्त बर्बाद करना पसंद नहीं है, मुझे डायरी वापिस करो ।

(रूपाली अंदर से डायरी लेकर आती है और थोड़ा सोच कर कहती है " वैसे ये सुनैना कौन है....

युवराज – (थोड़ा खामोश हो जाता है) बहुत बतमीज़ लड़की हो तुम।

मेरी जरूरत के बिना मेरी डायरी खोलने की हिम्मत कैसे हुई।

रूपाली – अरे अरे । ज्यादा गुस्सा करने की कोई जरूरत नहीं है। मैने डायरी को नहीं खोला वो तो बाहर लिखा हुआ था सुनैना युवराज। युवराज तो शायद तुम हो, सुनैना कौन है....

युवराज – अपने काम पर ध्यान दो और मेरी डायरी वापिस करो।

(रूपाली अपनी जिद्द पर अड़ी हुई थी)

रूपाली – पहले बताओ सुनैना कौन है ....फिर लौटा दूंगी तुम्हारी डायरी।

युवराज – प्रेमिका है मेरी। अब लाओ मेरी डायरी वरना तुम्हे इस नदी में गिरा दूंगा।

रूपाली – हाहाह... कोई बात नहीं गिरा दो। मुझे तैरना आता है।

युवराज मन ही मन रूपाली की शरारत भरी बातों से मुस्कुरा रहा था, लेकिन चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिए।

युवराज – मेरी डायरी....।

रूपाली – हम्मममम दे रही हु ।

(रूपाली , युवराज को उसकी डायरी वापिस कर देती है। युवराज शुक्रिया बोल कर चल देता है। रूपाली तेज आवाज में एक शेर पढ़ती है........

"देख तेरी झूठी मोहब्बत पर भी"

"मुझे फक्र करना आता है"

"तू कहता है मैं तेरे साथ हु"

"फिर क्यों ये दिल खाली पाता है".....

ये सुनकर युवराज के कदम थम जाते है वो वापिस रूपाली के पास आता है और कहता है

" झूठ भी बहुत खूब बोल लेती हो तुम। तुमने तो कहा था मैने डायरी नहीं खोली....फिर ये क्या है...ये शेर मेरा लिखा हुआ है जो तुमने अभी सुनाया।

रूपाली – हां मैं अब भी यही बोल रही हु मैने डायरी को नहीं खोला।

युवराज – डायरी नहीं खोली तो फिर ये शेर कहा से पढ़ा...

रूपाली – वो तो मेरे हाथ से डायरी छूट कर नीचे गिर गई थी, तब एक पन्ना बाहर निकल

गया, उसमें लिखा हुआ था ये...

"देख तेरी झूठी मोहब्बत पर भी"

"मुझे फक्र करना आता है"

"तू कहता है मैं तेरे साथ हु"

"फिर क्यों ये दिल खाली पाता है"

"ये दिल कितनी बार तोड़ा तुमने काफी नहीं है क्या"

"जो तू बार बार कहता है"

"मै चला जाऊंगा तेरी दुनिया से"

"जा रिहा है तू अब मेरी दुनिया से"

“मुझे सब्र करना आता है” ।

युवराज – बहुत तेज हो तुम। नाम क्या है तुम्हारा…

रूपाली – “मेरा रूपाली”। डॉक्टर रूपाली

युवराज – ओह ! फिर तो मुझे यहां एक पल भी नहीं रुकना चाहिए।

रूपाली – लेकिन क्यों…..मै कोई सांप दिखाई देती हु जो तुम यहां ठहरे तो मैं तुम्हे डस लूंगी।

युवराज – हम्ममम उससे कम भी नहीं हो तुम…..

रूपाली – हे तुम ऐसे क्यों बात कर रहे हो।

युवराज – डॉक्टर से नफरत है मुझे।

रूपाली – हाहाहाहाहा क्यों बचपन में डॉक्टर ने ज्यादा टीके लगा दिए थे क्या….

युवराज – हुह्ह पागल लड़की मजाक की भी हद होती है।

रूपाली युवराज के सामने गिड़गिड़ाने लगती है और उसे डायरी में लिखा हुआ बताने के लिए विनती करती है।

रूपाली – बता दो वरना मैं ये डायरी तुमसे छीन लूंगी।

युवराज – अच्छा ! इतनी हिम्मत, …तो छीन कर दिखाओ।

रूपाली अपना तेज दिमाग से काम लेती है और कहती है “ छोड़ो अगर तुम नहीं बताना चाहते तो मैं भी नहीं जानना चाहती”। फिर अचानक से

रूपाली, युवराज के पीछे के बल देखते हुए बोलती है – “ दादी आप यहां?

युवराज पीछे मुड़कर देखता है तभी रूपाली डायरी को युवराज के हाथ से छीनकर नदी में छलांग लगा लेती है। युवराज ये देख हैरान हो जाता है और उसकी बुद्धि की तारीफ करता है।

युवराज – अरे ! नदी से बाहर आओ, डायरी पानी से भीग जाएगी।

रूपाली – पहले वादा करो कि तुम सब बताओगे मुझे।

युवराज उसकी जिद्द के सामने हार गया। और वादा करता है। युवराज जन्म से लेकर अब तक की सारी कहानी सुनाता है। रूपाली आंखों में पानी लिए ध्यान से युवराज की बात सुन रही थी|

रूपाली भावुक होकर रोने लगती है।

युवराज – अरे तुम रोने क्यों लग गई ।

रूपाली - ….. वो लड़की तुम्हारे बगैर….कैसे रह सकती है ।

युवराज – हुह्ह मै भी इसी वहम में था। खैर छोड़ो शाम काफी हो गई, चलो घर जाओ।

रूपाली – और तुम…

युवराज – मै…..मै क्या…..

रूपाली – तुम कहा जाओगे अब ।

युवराज – मै वहीं…. जहां रोज जाता हु।

रूपाली – लेकिन कहा....

युवराज – इन दिलकश हार वालों का एक प्रकृति की छाव ही सहारा होती है।

रूपाली – और खाना....

युवराज – तुम मेरी चिंता मत करो, जाओ अंदर अपना काम करो।

रूपाली – अरे लेकिन खाना....

युवराज – अरे इतना भावुक न हो तो ही अच्छा रहेगा, मै कमाता हु कोई बेरोजगार नहीं हु।

मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहता।

रूपाली – अरे लेकिन.......

युवराज – तुम्हारी दादी मां इंतजार कर रही होगी, जाओ अंदर पागल लड़की।

इतना बोलकर युवराज वहां से चल जाता है। रूपाली के मन में युवराज के लिए थोड़ा सा प्यार जगा था। वो हर वक्त बस युवराज और उसके अतीत के बारे में सोचती रहती थी। रूपाली चाहती थी कि वो युवराज की मदद करे लेकिन युवराज का ऐसे चिड़चिड़ापन से रूपाली खामोश थी। अगले सवेरे रूपाली नदी के पास युवराज की राह देख रही थी, लेकिन युवराज आस पास कही दिखाई नहीं दिया। रोज ऐसे ही रूपाली सुबह शाम युवराज का इंतजार करती थी। एक सप्ताह हो गया लेकिन युवराज की एक झलक देखने को नहीं मिली। रूपाली परेशान हो जाती है और युवराज के गांव जाने का सोचती है। अगले सवेरे रूपाली , युवराज के गांव के लिए रवाना

हो जाती है। वहां पहुंचकर रूपाली गांव वालो से युवराज के बारे में पूछती है, लेकिन कोई भी ठीक से जवाब नहीं देता है। क्योंकि गांव वालों की नजरों में युवराज के सिर उसकी नानी के मौत का धप्पा लगा हुआ था। आगे चलकर रूपाली एक औरत से युवराज के बारे में पूछती है। औरत उसे युवराज का दोस्त वीरू का पता बताती है। बताए गए पते पर पहुंचने के बाद रूपाली देखती है एक आदमी घर का दरवाजा बंद करके कही जा रहा था। रूपाली पीछे से आवाज लगाती है "सुनिए.....क्या आपका नाम वीरू है....

वीरू ये सुनकर पीछे घूमता है।

वीरू – हां, मेरा ही नाम वीरू है। आप कौन.....

रूपाली – मेरा नाम रूपाली है, मै युवराज से मिलने आई हु। एक औरत ने बताया कि आप युवराज के दोस्त है।

वीरू – (थोड़ा ठहरते हुए) हम्ममम मेरा ही दोस्त है युवराज। आपको क्या काम है उससे।

रूपाली – मै एक डॉक्टर हु, यही पास ही में रहती हु। युवराज से कुछ जरूरी बात करनी थी। वो

काफी दिनों से मिला नहीं, इसलिए मैं यहां चली आई।

वीरू – तुम कैसे जानती हो युवराज को...

रूपाली – मेरे घर के पास एक नदी है, युवराज वही एकांत में बैठा हुआ था। तभी से पहचान हुई।

वीरू – मुझे नहीं लगता कि उसने ठीक से बात की होगी आपसे।

रूपाली – बिलकुल सही कहा आपने। अब भी खोया खोया रहता है।

वीरू – हम्ममम जानता हु।

रूपाली – वैसे मै युवराज की मदद करना चाहती हु। इसलिए यहां आई थी।

वीरू – कैसी मदद।

रूपाली – उसने मुझे बताया था कि उसके बाबा का एक सपना था, जो मुझे पूरा करना है।

वीरू – हां…..लेकिन मुझे नहीं लगता कि वो तुम्हारी मदद लेगा।

रूपाली – मुझे भी यही लगता है लेकिन तुम उसके अच्छे दोस्त हो, तुम इस काम में मदद कर

सकते हो।

वीरू – कैसे…..

रूपाली – तुम्हें बस युवराज को समझाना है, शायद वो राजी हो जाए।

वीरू – कोशिश कर सकते है।

रूपाली – ठीक है मैं चलती हु, युवराज आए तो बता देना उसे।

वीरू – वो यहां नहीं आता। मुझे ही उसके पास जाना होगा।

रूपाली थोड़े कदम चलने पर रुक जाती है और पीछे मुड़कर कहती है “ क्या मै आपसे एक सवाल कर सकती हु।

वीरू – हां बिल्कुल क्यों नहीं।

रूपाली – ये सुनैना कहा रहती है।

वीरू – (हैरानी से) तुम कैसे जानती हो उसे।

रूपाली – युवराज से पता चला था। मैने उसकी डायरी छीन ली थी, उसमें लिखा था सुनैना

युवराज, मेरे कई बार पूछने पर युवराज ने बताया कि सुनैना मेरी प्रेमिका है।

वीरू – ओर क्या कहा उसने…

रूपाली – अपने बचपन की बाते भी बताई थी। जब छोटा था तब मां – बाबा छोड़ गए। नानी ने

प्यार से बड़ा किया। लेकिन मैं नानी के लिए भी कुछ न कर सका। फिर सुनैना से

मुलाकात हुई, दोनों को एक दूसरे से प्यार हो गया। दोनों का रिश्ता 5 साल तक

चला लेकिन सुनैना के घरवालों ने उसकी शादी कर दी। उसके बाद से मैं सुनैना से

कभी नहीं मिला।

वीरू – बहुत पागल इंसान है, सफेद कपड़े में लगे दाग को अब भी फूल बताता है।

रूपाली – क्या मतलब…

वीरू – जहां तक युवी ने बताया वो सुनैना से मिला , दोनों को प्यार हो गया लेकिन सुनैना की

शादी उसके घरवालों ने अपनी इच्छा से नहीं की। सुनैना ने खुद शादी के लिए बोला था।

जिस अस्पताल में युवी काम करता था, वहां का डॉक्टर हरीश जिसे सुनैना पसंद करती

थी। शहर घूमने के बहाने सुनैना उस डॉक्टर से मिलने जाती थी। युवी की मौजूदगी में

क्या क्या होता था, वो अंजान है इन सब बातों से।

युवी ने एक एक पैसा जोड़ कर सुनैना के असली हार पहनने का सपना पूरा किया।

तुम कभी युवराज का बायां हाथ देखना।

रूपाली – क्या हुआ उसके बाएं हाथ में।

वीरू – युवराज का बायां हाथ नकली है।

रूपाली – क्या… तभी युवराज हमेशा उसमें कोहनी तक ग्लव्स पहले रखता है।

वीरू – हम्ममम, पागलों की तरह चाहता था वो सुनैना को। आज भी अगर कही सुनैना दिख

जाए तो वो भूल जाता है कि वो किसी ओर की हो चुकी है।

रूपाली – लेकिन युवराज का बायां हाथ नकली क्यों.....

वीरू – सब कुछ सुनैना की खातिर। युवराज जल्दी पैसे कमा कर जल्दी ही सुनैना को अपने घर लाना चाहता था। लेकिन सुनैना ने एक नये घर की मांग की।

युवराज ज्यादा पैसे के लिए एक फैक्टरी में गया, जहां पत्थर काटने का काम किया जाता था। युवराज ने वहा कुछ दिन काम किया एक दिन पत्थर काटते समय हाथ फिसल गया और युवी अपना हाथ गवां बैठा।

सुनैना और नानी को इस बात की भनक भी नहीं लगने दी। हाथ ठीक होने तक युवराज बाहर ही रहा। सुनैना अंजान है इस बात से युवराज ने उसे पाने के लिए कितने पापड़ बेले है।

रूपाली – ये तो कही का न्याय नही है।

वीरू – हुह्ह प्यार में कभी किसी का न्याय हुआ है। प्यार के बदले प्यार कहा मिलता है।

रूपाली – अब कहा रहती है सुनैना। क्या वो लौट कर वापिस नहीं आ सकती।

वीरू – अच्छा मजाक है। वापिस आना होता तो छोड़ती ही क्यों...

सुनैना अब 2 बेटों की मां है। वो क्यों आएगी लौटकर।

रूपाली – क्या वो डॉक्टर, युवराज के जितना प्यार करता होगा सुनैना से।

वीरू – शायद नहीं। क्योंकि कुछ दिनों पहले मैने सुनैना को देखा था, उसके चेहरे से वो नूर मिट गया, जो पहले था।

रूपाली – (उदास मन से) कैसे संभाला होगा युवराज ने खुद को।

वीरू – सब कुछ काबू से बाहर हो रहा था। युवराज अपने आप को खो चुका था। जब भी उसे सुनैना की याद आती वो उसी पेड़ के नीचे चला जाता, जहां वो सुनैना से पहली बार मिला था। जहां से उनके प्यार की शुरुआत हुई थी। युवराज जानवरों की तरह खुद को नोचता, चिल्लाता। आंखों में टूटी हुई उम्मीद लिए घूमता रहता।

सुनैना ने युवराज को कही का नहीं छोड़ा। युवराज की आंखों के सामने ही उसके ख्वाबों का गला घोट दिया गया। यह सब जानकर रूपाली को अत्यंत दुख हुआ और अपने घर चली गई।

जब शाम को युवराज वीरू के पास आया तो वीरू ने उसे सब बताया....

चिंतित होकर युवराज रूपाली के घर की तरफ दौड़ता हुआ जाता है। वहां पहुंचकर युवराज देखता है कि रूपाली अंधेरा होने के बाद भी नदी के किनारे बैठी हुई थी।

युवराज हल्के हल्के कदमों से उसकी तरफ बढ़ता है और पास जाकर बैठ जाता है।

युवराज – रूपाली....तुम मुझे लेकर इतनी परेशान क्यों हो ?

रूपाली – (गुस्से से) नहीं हु....जाओ।

युवराज – नही हो तो फिर वीरू से मिलने क्यों गई थी।

रूपाली – ऐसे ही....

युवराज – रुपाली……। देखो तुम अभी मेरे बारे में कुछ नहीं जानती हो समझी। तो इतना सोचना

ठीक नहीं है।

रूपाली – मैने कहा कुछ सोचा है…

युवराज – हनन वो तो दिखाई दे रहा है। चलो अंदर जाओ काफी अंधेरा हो गया है।

रूपाली – चली जाऊंगी।

युवराज – हां अभी जाओ।

रूपाली – तुमहे इतनी फिक्र क्यों है…

युवराज – (थोड़ा रुककर बोलता है) तुम करती हो इसलिए…

रूपाली – हां तो अहसान कर रहे हो।

युवराज – हे भगवान ।

समझा करो रूपाली जाओ अंदर ।

रूपाली – ठीक है चली जाऊंगी लेकिन….एक शर्त पर।

युवराज – और वो क्या है…

रूपाली – तुम्हे खाना खाकर यही रुकना होगा।

युवराज – ये मुझसे नहीं होगा, और मैने खाना खा लिया।

रूपाली – तो ठीक है फिर….जाओ तुम। मैं यही बैठी रहूंगी।

(युवराज हर बार उसकी जिद्द के सामने हार मान लेता था)

युवराज – ठीक है।

[धीरे धीरे समय गुजरता गया रूपाली और युवराज दोनों साथ में काम किया करते थे। रूपाली, युवराज को हॉस्पिटल के सारे काम सिखाने लगी। कोई बाधा आती तो दोनों मिलकर उसे संभाल लेते थे। रूपाली युवराज को पसंद करने लगी थी, लेकिन कभी उसने ये बात बोलने की हिम्मत नहीं की। समय के साथ साथ रूपाली और युवराज काफी गहरे दोस्त बन गए।

रूपाली हर काम में युवराज की मदद करती थी।

अब वक्त आ गया था युवराज को अपने बाबा का सपना पूरा करने का, युवराज के मेहनत से कमाए पैसों से ओर रूपाली के साथ से गांव में एक अस्पताल खोलता है।

युवराज ये सपना पूरा होते देख काफी खुश था और रूपाली का धन्यवाद करता है।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन युवराज आज भी सुनैना का बहुत याद करता था। वह चाहकर भी अपने अतीत को नहीं भुला पा रहा था। रूपाली हमेशा युवराज के उसके अतीत को भुलाने की कोशिश करती लेकिन वह नाकाम थी। युवराज आज भी सुनैना को पत्र लिखता था लेकिन सुनैना का एक भी पत्र पर जवाब नहीं मिलता था।

युवराज की तो ऐसी दशा देख कर रूपाली बहुत परेशान रहती थी।

(एक दिन)

युवराज नदी के किनारे शांत बैठा था। रूपाली उसे देखकर युवराज के पास जाकर चुपचाप बैठ जाती है।

(थोड़ी देर बाद) रूपाली युवराज से – अब भी उन्हीं ख्यालों में खोए हुए हो क्या....

युवराज – कौनसे ख्याल....

रूपाली – वही....। जो दिन प्रतिदिन तुम्हारे स्वास्थ को बिगाड़ रहे है।

युवराज – (मुस्कुराता है) नहीं ऐसा कुछ नहीं है जो तुम सोच रही हो।

रूपाली – यही सच है युवराज।

आखिर क्यों तुम खुद को खत्म करने पर तुले हुए हो। क्या कभी तुमने ये सोचा है

की जितना तुम उसे याद करते हो, इतना उसके लिए तड़फते हो, क्या वो भी तुम्हे याद कर रही होगी। क्या उसका भी यही हाल हो रहा होगा, जैसा अब तुम्हारा है।

क्या वो भी तुम्हे याद करके रातों में जगा करती होगी.....

(ये सुनकर युवराज खामोश रहता है)

रूपाली – बोलो युवराज। जवाब दो मुझे।

(रूपाली के बार बार दिल को छूने वाले सवाल सुनकर युवराज की आंखों में आंसु आ जाते है।

युवराज – (रोते हुए) रूपाली यही रुक जाओ। आगे कुछ मत बोलना। ऐसा लग रहा है जैसे कोई सीने को चीरकर मेरे दिल को बाहर निकाल रहा है। (इतना कहकर युवराज जोर जोर से रोने लगता है।

रूपाली समझदार होने के साथ साथ इंसान को हर परिस्थितियों में संभालना भी जानती थी । रूपाली उसे गले से लगा लेती है और कहती है – "तुम फिक्र मत करो, मै हु न" ।

ये दो ऐसे वाक्य है जो इंसान को काफी हद तक सहारा देते है। ऐसे रूपाली युवराज को शान्त करवाती है।

फिर एक दिन युवराज सुनैना के लिए एक पत्र लिखता है...

╔--╗

हैलो सुनैना,

इस बार मैं तुम्हारा हाल नहीं पूछ रहा, क्योंकि मुझे पता है मेरे बगैर तुम खुश हो लेकिन कही न कही बेचैन भी हो। मैंने तुम्हारे लिए बहुत सारे पत्र लिखे लेकिन अब ये आखिर होगा। सुनैना मै भले ही एक कामयाब इंसान न बन सका लेकिन मुझ जैसा अच्छा इंसान तुम्हे शायद अब देखने को भी न मिले।

इंसान के रूप में मिले एक फरिश्ते की मदद से आज मैं इस मुकाम पर हु। गांव में जो हॉस्पिटल बना है "युवराज हॉस्पिटल" ये मेरे बाबा ओर गांव वालों को बहुत खुशियां देने वाला है। भले ही ये जानकर तुम्हारे चेहरे पर खुशी की एक झलक नहीं आई हो लेकिन तुम्हारी आंखों आई चमक ये बया करेगी कि तुम्हे थोड़ी सी तो खुशी हुई है।

मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हु सुनैना। मेरे जवाब के लिए मुझे पत्र मत लिखना, मुझे तुम्हारे पत्र का इंतजार नहीं रहेगा। हर सवाल को पढ़कर तुम्हारे दिल ओर दिमाग में आने वाली वो पहली बात, वो पहला ख्वाब ही मेरे सवाल का जवाब होगा।

तुम शायद मुझे देखना भी पसंद नहीं करती हो लेकिन कही न कही मेरी कमी महसूस तो होती होगी। तब क्या करती हो सुनैना तुम।

मेरा प्यार भले ही तुम स्वीकार नहीं कर सकी लेकिन भूलना भी आसान नहीं है। अपने दिल को तुम क्या कहकर तसल्ली देती हो सुनैना की मै कभी तुम्हारा कुछ था ही नहीं।

क्या तुम्हारा दिल तुम्हे हो रही बेचैनी का कारण नहीं पूछता।

कभी तो जोरो से धड़कता होगा, फिर एक दम से शांत हो जाना। सच बताना तुम्हारे मन के अंदर ये चक्रव्यूह चलता ही नहीं है या फिर चलता है तो संभाल कैसे लेती हो।

क्या तुम भी मेरी तरह हंसती, मुस्कुराती हुई अचानक शांत हो जाती हो।

क्या तुम्हारा मन भी तुमसे ऐसे हजारों सवाल करता है जिनका तुम्हारे पास कोई जवाब ही नहीं हो। क्या तुम भी रातों में अचानक गहरी नींद से जग जाती हो। अचानक नींद से उठने के बाद हो रही बेचैनी से परेशान तो होती होगी न तुम। तुम ठीक हो ये अहसास दिलाने के लिए चेहरे पर हाथ फेरती होगी। लेकिन दिल पर हाथ रख कर ये महसूस किया है कभी की ये बेचैन क्यों है .....शायद नहीं।

क्या तुम्हारे कदम भी चलते चलते अचानक कुछ पल के लिए थम जाते है। क्या तुम भी अपनी बेचैनी का हल ढूंढने के लिए अपने मन से झगड़ा करती हो।

सुनैना भले ही तुम्हे मेरी याद न आती हो लेकिन मुझे अपने प्यार पर इतना तो भरोसा है जब तुम्हारी शादी में तुम्हारे हाथों पर मेंहदी लगाई जा रही थी, उस मेहंदी से तुम्हारी हथेली पर मेरी जगह किसी ओर का नाम लिखा होगा। मेहंदी लगाने वाली ने तुमसे पूछा होगा दूल्हे का नाम क्या है। उस वक्त तुम्हारे दिल ओर जुबान पर मेरा नाम तो आया होगा न। उस वक्त तुम भी कुछ सैकेंड के लिए खामोश हुई होगी। अगर इस दौरान भी तुम्हे मेरी याद नहीं आई हो तो लानत है मुझे मेरी मोहब्बत पर।

एक आखिरी सवाल सुनैना दिल से जवाब देना। क्या तुम सच में खुश हो मेरे बगैर। क्या तुम्हे इतना प्यार मिलता है जितना मैं तुम्हे करता था। यदी “हा” तो अच्छी बात है। मेरी दुआ है तुम हमेशा खुश रहो।

~युवराज

╚ -- ╝

(फिर एक दिन)

[7 फरवरी, रविवार, समय शाम 10:15]

युवराज किसी काम से शहर गया था। युवराज की नजर एक लड़की पर पड़ती है, जिसके सिर और हाथ पर चोट लगी थी, उसके साथ एक छोटा बच्चा जो हाथ से पकड़े हुए थी। युवराज उसकी तरफ एक नजर देखता ही रहता है, दिखने में हूबहू सुनैना के जैसी थी। युवराज थोड़ा पास जाता है और गौर से देखने लगता है। सुनैना के जैसे दिखने वाली लड़की कोई और नहीं बल्कि सुनैना ही थी। युवराज को उसकी चोट देखकर दुख हुआ। वो कुछ बोलता उससे पहले सुनैना एक कार में बैठ कर जाती है। युवराज उसे आवाज लगाता है। युवराज काफी डर गया था, उसे लगा शायद सुनैना ठीक नहीं है, चिंतित होकर युवराज कार का पीछे करते दौड़ने लगता है। जोर जोर से सुनैना को आवाज भी लगाता है लेकिन सुनैना नहीं रुकती है। युवराज कार के पीछे दौड़ ही रहा था तभी आगे से आ रहे डंपर से एक दुर्घटना घट जाती है। डंपर ने 8 लोगों को टक्कर दे दी, जिनकी गिनती में युवराज भी शामिल था। हादसा इतना भयंकर हुआ लोग वही कुचल कर मर गए।

उधर रूपाली जो युवराज का जन्मदिन मनाने के लिए तैयारी कर रही थी। आसपास का वातावरण रंगीन लाइट से चमक रहा था रूपाली केवल अब युवराज के आने का इंतजार कर रही थी|

थोड़ी देर बाद रूपाली को जानकारी मिलती है कि युवराज की एक दुर्घटना में मौत हो गई।

ये सुनकर रूपाली की धड़कन सहम जाती है, उसके पैरों तले जमीन खिसक जाती है, रूपाली जो युवराज को उसके जन्मदिन पर अपने दिल की बात कहने वाली थी वो बस एक ख्वाब बनकर रह गया।

रूपाली जल्दी से वहां दुर्घटना स्थल पर पहुंचती है। वहां का माहौल देखकर रूपाली अंदर से हिल जाती है। 500 मीटर के दायरे को पुलिस ने सील कर रखा था। सड़क खून से लाल थी, चारों तरफ एंबुलेंस का सायरन रूपाली को कमजोर बना रहा था। पुलिसकर्मी सड़क पर बिखरे शव ओर टुकड़ों को इक्कठा कर रहे थे।

आसपास जूते, फोन और मृत लोगों का सामान बिखरा हुआ था। रूपाली की नजर एक घड़ी पर पड़ती है जिसे देखकर उसके घुटने दम तोड़ देते है। क्योंकि वो घड़ी युवराज की थी। रूपाली जोर से चिल्लाती है "युवराआआज"…. और अंदर जाने की कोशिश करती है।

पुलिसकर्मी रूपाली को पकड़कर दूर ले जाते है। रूपाली गला फाड़ फाड़कर रो रही थी।

सभी शवों को अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने मृतकों के परिजनों का DNA लेकर उनको शव सौंप दिया। लेकिन युवराज का अभी तक कुछ पता नहीं चला। अस्पताल के प्रतीक्षा कक्ष मे सिर्फ रूपाली बैठी हुई थी। डॉक्टर और पुलिसकर्मी रूपाली से DNA टेस्ट के लिए कहते है।

लेकिन रूपाली कहती है – जो इंसान मैंने खोया है उसका नाम युवराज है। वो बचपन से ही अनाथ था, उसका कोई नहीं था इस दुनिया में ।

डॉक्टर – आप कौन है? क्या लगती है उनकी ।

रूपाली – मेरा नाम रूपाली है। मैं सरकारी डॉक्टर हु। युवराज मेरा दोस्त था।

(मुर्दाघर में अभी भी 2 शव रखे हुए थे जिनके परिजन अभी तक नहीं आए थे।)

डॉक्टर – बिना DNA के कैसे पता लगेगा कि युवराज का शव कौनसा है।

रूपाली – युवराज की घड़ी से शायद पता लगाया जा सकता है।

डॉक्टर – हा कोशिश कर सकते है। लेकिन वहां पर मिली सभी वस्तुओं पर अलग अलग लोगों का खून लगा हुआ है। हम मैच करके देखते है।

दो दिन बाद लावारिश शव में से एक के परिजन आते है। उनका DNA लेकर शव परिजनों को सौंप दिया जाता है।

अब मुर्दाघर में केवल एक शव था जिनके परिजन अभी तक नहीं आए थे। डॉक्टरों ने अनुमान लगाया कि शायद यही युवराज का शव है। क्योंकि घड़ी पर मिले खून ओर मुर्दाघर में रखे हुए शव से मैच नहीं हो रहा था।

पुलिसकर्मी और डॉक्टर ने अनुमान लगाया, " ऐसा भी हो सकता है जब यह दुर्घटना घटी तब युवराज अपनी घड़ी को निकाल कर पहन रहा हो , घड़ी युवराज के हाथ में होगी, टक्कर लगते ही घड़ी छूट गई होगी इसलिए शायद युवराज का खून घड़ी पर नहीं लगा हो।

1 दिन ओर इंतजार करने के बाद डॉक्टर और पुलिसकर्मीओ ने आगे से अनुमति लेकर शव को रूपाली के हाथ सौंप दिया।

रूपाली उसे लिपट लिपट कर रोने लगी। और गांव जाकर टूटे ख्वाबों के साथ उसका अंतिम संस्कार करती है।

रूपाली इस मंजर से काफी हद तक हिल चुकी थी। क्योंकि लगाव एक ऐसा नगमा है जो अगर किसी से हो जाए तो उसका नजरअंदाज करना भी इंसान को अंदर से खोखला कर देता है।

रूपाली युवराज की यादों में खोई रहती थी। वो भी युवराज की तरह कागज पर शेर और अपने ख्वाब लिख लिखकर फिर उस कागज को मोड़कर नदी में बहा देती थी।

एक दिन रूपाली बहुत दुखी थी, क्योंकि आज वो दिन था जब रूपाली युवराज को अपने दिल की बात बोलने वाली थी।

(रूपाली को युवराज से बिछड़े हुए पूरा 1 साल हो गया था।)

आज 7 फरवरी थी, युवराज का जन्मदिन था लेकिन रूपाली को दुख था क्योंकि युवराज उसके पास नहीं था। वो किनारे उस पेड़ के नीचे बैठकर एक कागज पर अपना दर्द लिखती हैं.....

┌---┐

"जाना ही था तो आया ही क्यूं"

"दिल में रहना ही नहीं तो लगाया ही क्यूं"

"ये मंजर देख मुझसे बर्दाश्त नहीं होता"

"प्यार करना ही नहीं तो जगाया ही क्यूं"

"कैसे जिऊ अब बिन तुम्हारे कोई तो रास्ता दिखा"

"जब साथ चलना ही नहीं था तो रास्ता बनाया ही क्यूं"

"ये बिखरे फूल भी अब मुझे काटे लगते है"

"कैसे मै इनसे प्यार करूं"

"तू लौटकर आए तो बता मुझे, मैं तेरा इंतजार करूं"

"अपने ख्वाबों की बुनी थी एक चादर मैने"

"ओढ़े बिना ही चले गए"

"तू ही बता इसे संभाल कर रखूं या धागे – धागे पार करूं"

"कैसे ये खुशी के आशु गम में बदल गए"

"ना तुम, तुम रहे और ना हम, हम"

"और सब छोड़ो ये बताओ"

"इस दिन तुम्हारे आने की खुशी मनाऊं या जाने का गम"

L--┘

फिर उस कागज को मोड़कर नदी में बहा देती है। रूपाली ने रो रो कर अपनी हालत खराब कर ली थी। लेकिन रूपाली के मन में युवराज की मौत की आग जल रही थी। रूपाली पूरी तरीके से सुनैना के खिलाफ थी, उसका मानना था शायद सुनैना युवराज के साथ ऐसा गलत नहीं करती तो युवराज आज जिंदा होता।

मन में लगी आग रूपाली को चैन से बैठने नहीं दे रही थी। एक दिन रूपाली सुनैना से मिलने जाती है। सिर्फ इतना जानने के लिए कि क्या ऐसा करके उसके दिल को सुकून मिल गया।

रूपाली जब सुनैना से मिली तो उसकी हालत देख कर उसे अफसोस हुआ। सुनैना के 2 छोटे छोटे बच्चे थे, लेकिन नूर ऐसा था जैसे वो बुढ़ापा यापन कर रही हो।

मुंह पर झुर्रियां पड़ी हुई थी, दुबला पतला शरीर।

रूपाली – ऐसी हालत कैसे....

सुनैना – कैसी हालत..., आप है कौन?

(रूपाली का उससे प्यार से बात करने का बिल्कुल मन नहीं था, इसलिए वो समय बर्बाद किए बिना सीधे जवाब दे रही थी।)

रूपाली - मै डॉक्टर हु, नाम रूपाली

सुनैना – हनन बोलिए....

रूपाली – खुश हो तुम...

सुनैना – हा....मतलब क्यों क्या हुआ...

रूपाली – ऐसी जिंदगी लेकर खुश हो तुम..

सुनैना – क्या मतलब है तुम्हारा, किस सिलसिले में बात करना चाहती हो।

रूपाली – युवराज की जिंदगी को नर्क बनाकर खुश हो तुम...

सुनैना – यु...युवराज...

रूपाली – बोलो बोलो

सुनैना – मै नहीं जानती कौन युवराज।

रूपाली – हुह...अच्छा युवराज यहां नहीं है, वरना सुनकर ही बेचारा हिल गया होता। मेरे इस बात का जवाब दे दो मैं चल जाऊंगी यहां से...

सुनैना – (रोते हुए) मुझे नहीं पता कौन क्या है.....

रूपाली – हनन नाटक अच्छा कर लेती हो, हालत से साफ दिखाई दे रहा है कैसी जिंदगी चल रही है, लेकिन जुबान से भी बता देती तो सही रहता।

सुनैना – देखो तुम जो भी हो.... क्या रिश्ता है तुम्हारा युवराज से मै नहीं जानती...

रूपाली – सोच में नहीं गिरना, मै बता देती हु। दोस्त हु मै युवराज की

सुनैना – ओह! वहीं इंसान के रूप में मिला फरिश्ता शायद....

रूपाली – हुह.... मतलब तुम युवराज के लिखे पत्र पढ़ती थी, (रूपाली उसके बाल नोच लेती है)

इतने पत्थर दिल की औरत हो मुझे आज पता चला।

(रूपाली गुस्से से) आज युवराज जिंदा होता अगर तुम उसके पत्र के जवाब दे देती

तो।

सुनैना – (हैरान होते हुए) क्या.......क्या हुआ युवराज को

रूपाली – मै इंसान की रग रग से वाकिफ हु, अच्छा होगा तुम मेरे सामने ये नदी नाले न

बहावो तो।

सुनैना – (रोते हुए) हा मैने खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। मैं चाहती तो युवराज से

शादी कर सकती थी। लेकिन मैने....

(रूपाली उसकी बात बीच में ही काट देती है)

रूपाली – हा हा सब पता है मुझे, तुम्हारी जनम कुंडली नहीं सुनने आई मै यहां।

तेरी आंखों में ये पैसों का लालच साफ झलक रहा है, पैसों के लिए तूने युवराज को

छोड़ दिया। तुम्हारी कार के पीछे ही भगा था ना युवराज, अरे कम से कम एक बार बोल लिया होता उसे…तो आज वो जिंदा होता।

उसने कब कहा कि तुम उससे प्यार करो, बस एक झलक पाने के लिए रोज मरता था वो रोज।

(रूपाली अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पा रही थी, लेकिन सुनैना के 2 छोटे छोटे बच्चों को देख कर, सुनैना को उसकी हालत पर छोड़ कर चली गई।)

[1 साल 2 महीने बाद]

रूपाली कपड़े सुखा रही थी। एक छोटा बच्चा मां – मां पुकारता हुआ अंदर से आता है। रूपाली उसे प्यार से गोद में उठा लेती है। रूपाली को महसूस हुआ कि उसे कोई देख रहा है।

वह आस – पास नजर घुमाती है। एक अंजान व्यक्ति जो रूपाली को देख रहा था। रूपाली नजरअंदाज करके अपने काम में व्यस्त हो जाती है लेकिन अब भी वो व्यक्ति उसे घूरे जा रहा था। रूपाली उसके पास जाती है और कहती है "कौन हो तुम, और ऐसे ताड़ क्या रहे हो मुझे।

वो व्यक्ति बिना कुछ बोले उसे देखता रहता है। रूपाली फिर से कहती है मै तुम्हे बोल रही हु….देख क्या रहे हो मुझे।

वो व्यक्ति कहता है – "काफी समय हो गया देखे, थोड़ा देखने दो प्लीज"

रूपाली आवाज सुनकर थोड़ी सहम जाती है, फिर थोड़ा आवाज अटकाते हुए कहती है " देखो तुम जो भी हो चले जाओ यहां से।

वो व्यक्ति हल्का सा मुस्कुराता है। ये सब देख कर रूपाली हैरान हो रही थी। क्योंकि उस व्यक्ति की मुस्कुराहट और आवाज दोनों युवराज से मिलती थी। रूपाली को असके अंदर युवराज की छवि नजर आ रही थी। वह दौड़कर अंदर चली जाती है।

तीन दिन गुजर गए रूपाली हर रोज उस व्यक्ति को नदी के किनारे देखती थी।

(फिर एक दिन)

वो व्यक्ति मनु के साथ खेल रहा था। रूपाली खाने की प्लेट लेकर मनु को ढूंढ रही थी। उसने देखा कि मनु उस अंजान व्यक्ति के साथ खेल रहा है।

रूपाली गुस्से से उसके पास जाती है और कहती है – "तुम हो कौन, चाहते क्या हो...

वो व्यक्ति धीमी ओर प्यारी आवाज में कहता है – " भूल गई" ।

रूपाली – मै नहीं जानती तुम्हे।

तब वो व्यक्ति कहता है – " अब कहा गया तुम्हारा वो हुनर चेहरे देखकर अतीत पता लगाने का। तुम्हीं तो कहती थी न....

"ना कह सकते जुबान से तकलीफ को अपनी"

"हम चेहरे के नूर से अतीत को भांपने का हुनर रखते है" ।

(ये सुनकर रूपाली 2 कदम पीछे हट गई। उसके हाथ से खाने की प्लेट छूट जाती है। और उस व्यक्ति को कसकर गले लगा लेती है। क्योंकि वो कोई ओर नहीं युवराज ही था।

रूपाली उसे गले से हटाने का सोच भी नहीं रही थी। रूपाली रोते हुए कहती है “अगर ये कोई सपना हुआ तो मैं जिंदा ही मर जाऊंगी”।

युवराज उसकी पीठ सहलाते हुए कहता है “नहीं ये हकीकत है” ।

थोड़ी देर बाद युवराज उस छोटे बच्चे की तरफ इशारा करते हुए कहता है “ ये सब कब हुआ…

रूपाली – (मुस्कुराते हुए) नहीं नहीं आसा कुछ नहीं है। मन अशांत रहता था इसलिए अनाथ

आश्रम से ले लिया। पहले तुम्हारे जाने का दुख फिर दादी।

युवराज – दादी…लेकिन कब ।

रूपाली – चार महीने हो जाएंगे।

(इतना सुनकर युवराज रूपाली को गले से लगा लेता है।)

सूरज ढल गया था, अंधेरा बहुत हो गया था। मनु (छोटा बच्चा) सो गया था ।

रूपाली – चलो कुछ खाते है।

युवराज – नहीं….

रूपाली – लेकिन क्यों….

युवराज – तुम्हे देखते ही पेट भर गया था।

(इतना कहकर युवराज फिर से रूपाली को जोर से खुद से चिपका लेता है)

युवराज – मै महसूस कर सकता हु, तुम कितनी परेशान हुई होगी मेरे बगैर....। परेशान तो क्या

शायद जीने की उम्मीद ही छोड़ दी हो।

रूपाली – (युवराज के पीठ पर थप्पड़ मारते हुए) बस करो...मुझे बीता हुआ पल याद नहीं

करना, डर लगता है।

युवराज – जानना नहीं चाहेगी मैं जिंदा कैसे....

रूपाली – नहीं अभी नहीं।

अभी तुम मेरे पास चिपके रहो। मैं फिर से तुम्हे खोना नहीं चाहती।

युवराज – (मुस्कुराते हुए) हा हा मैं कौनसा जा रहा हु दूर तुमसे।

आधी रात हो गई थी। दोनों अभी भी नदी के किनारे पेड़ के नीचे बैठे हुए थे।

युवराज ने अपना सिर रूपाली के पैरो में रखा हुआ था और रूपाली को एक नजर निहारे जा रहा था। रूपाली के दोनों हाथ युवराज के हाथों में थे।

युवराज – रुपाली, तुम्हे मेरे चेहरे से नफरत तो नहीं है न।

रूपाली – नफरत क्यों...

युवराज – हाहाहाहाहा एक आंख का युवराज जो बन गया।

(उस सड़क हादसे में युवराज ने अपनी एक आंख को खो दिया था।)

जब सब शांत था तब युवराज पूरी कहानी बताता है....

"रूपाली तुम्हारे प्यार और दुआ ने बचा लिया मुझे। जब मैं सुनैना की कार के पीछे दौड़ रहा था तब सामने से आ रहे डंपर ने टक्कर दी। उसकी चपेट में आने वाले हर व्यक्ति को कुचल दिया।

मै भी कुचल गया होता लेकिन एक आदमी ने मेरा हाथ पकड़कर बाई तरफ धकेल दिया। मुझे डंपर की हलकी सी टक्कर लगी थी। खुद को संभाल नहीं पाया इसलिए पीछे उस घाटी में गिर गया। जमीन पर मुंह के बल गिरने से एक नुकीला पत्थर मेरी आंख में घुस गया।

ऊंचाई से गिरने की वजह से काफी घायल हो गया था। मुश्किल से तीन से चार कदम चला फिर बेहोश होकर गिर गया। होश आया तो मैं ICU में था। मेरा बोल पाना बहुत मुश्किल था। एक आंख से कुछ भी ठीक से दिखाई भी नहीं दे रहा था। मैं उठने की कोशिश करता लेकिन सिर में लगी चोट मुझे उठने नहीं देती थी। मुझे चक्कर आते मै फिर से गिर जाता था।

जब मुझे ठीक से होश आया तो पता चला मै दस महीने ICU में भर्ती रहा हु। मेरे दिमाग में में बार बार वो हादसा ही घूम रहा था। तीन महीने में व्हीलचेयर पर रहा।

रूपाली – यूवी इतनी देखभाल की किसने...

युवराज – है कोई। ऐसे इंसानों को मै भगवान का दर्जा देता हु। भला आज के युग में इंसान दूसरे इंसान को तड़पा तड़पा कर मार रहा है। मुझे मरते हुए को बचाया है।

जाऊंगा जल्दी ही फिर से उस भगवान से मिलने हिसाब चूकता करके आना है।

रूपाली – नहीं कर पाओगे।

युवराज – अरे, मै पैसों की बात कर रहा हु। देखभाल करने का अहसान तो मैं जिंदगी भर नहीं

चुका पाऊंगा। पर पैसे भी वक्त पर लगाए है ये अहसान हमेशा मेरे सिर रहेगा।

(कुछ पल दोनों चुप रहते है)

युवराज – रुपाली, मुझे कुछ कहना है।

रूपाली – मुझे भी…

युवराज – हनन पहले तुम बोलो।

रूपाली – नहीं पहले तुम, फिर मै…

(हमेशा की तरह आज भी युवराज रूपाली की जिद्द से हार मान बैठा)

युवराज – सीधा बोलकर बताऊं या पंक्तियों में इजहार करु….

रूपाली – हम्ममम पंक्तियों में (क्योंकि रूपाली जानती थी युवराज बहुत अच्छा शेर कर लेता है)

युवराज –

सिर्फ तुम

“एक उम्मीद है मेरी, जो किसी ओर का होने नहीं देती”

“एक ख्वाब है मेरा, जो दूसरा संजोया नहीं जाता”

“एक तलब है मेरी, जो तेरी ओर खिंचती है मुझे”

“एक प्यार है मेरा, जो हर किसी पर जताया नहीं जाता”

“एक ख़ुशी है मेरी, जो रास आती है तेरी आँखों में”

“एक नूर है, जो तेरे चेहरे से हटता नहीं”

“एक आश है, जो दिल तुझ पर लगाये बैठा है”

“एक विश्वास है, जो मुझे टूटने नहीं देता”

“एक सपना है मेरा, जो साथ तेरे सजाया है”

“एक कहानी है मेरी, जिसका किरदार तुझे और मुझे निभाना है”

“तुम साथ जो दो मेरा, तो सारी कायनात की ख़ुशी तेरे नाम करदु”

“एक हक है मेरा, जो सिर्फ तुम पर जताना है”

“चलो सारी दुनिया को एक तरफ करते हैं”

“एक जिंदगी है मेरी, जो तेरे साथ बितानी है”

“जो तेरे साथ बितानी है.......!!

(रूपाली की सुबह आँखें खुलती है तो खुद को एकांत में पाती है| नम आँखें लिए रूपाली एक ही बात बोलती है, ‘‘काश! ये सपना, सपना नहीं हकीकत हो पाता।

‘‘लौट आओ युवराज……।।